[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No. 2306950 3173

Sr. No. of Question Paper : 2446 G

Unique Paper Code : 2055091001

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya ka Udbhav aur Vikas (A)

Name of the Course : **B.Com. (Prog.) – GE**

Semester : I

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए :

(क) खड़ी बोली

(ख) अवधी बोली

P.T.O.

Scanner by Droid-Veda

(ग) अपभ्रंश भाषा

(घ) हिन्दी भाषा का उद्‌भव (10,10)

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :

(क) वीरगाथा काल

(ख) प्रेमाभक्ति काव्य

(ग) रीतिमुक्त कविता

(घ) भारतेन्दु काल (10,10)

3. मीराबाई के काव्य की भक्ति भावना को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

बिहारी लाल के दोहे भक्ति, नीति और शृंगार की त्रिवेणी है। कथन की समीक्षा कीजिए।

4. जयशंकर प्रसाद की कविता में भारतीय राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति हुई है, स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

Scanner by Droid-Veda

अकाल और उसके बाद कविता की मूल भाव को स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित पद्यांसों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10,10)

(क) जाका गुर भी अंधला, चेला खरा निरंध
अंधा अंधा ठेलिया, दून्यूँ कूप पड़ंत।
चौंसठि दीवा जोइ करि, चौदह चंदा मांहि
तिहिं घरि किसकौ चानिणौ, जिहि घरि गोविन्द नाहिं।

अथवा

हरि म्हारा जीवन प्राण अधार। (टेर)
और आसरा णा म्हारे थें विण तीनूं लोक मँझार।
थें विण म्हाणे जग णा सुहावाँ, निरख्याँ सब संसार।
मीरा रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो नेक निहार।

(ख) वे मोह-बंधन-मुक्त थे, स्वच्छंद थे, स्वाधीन थे;
संपूर्ण सुख-संयुक्त थे, वे शान्ति-शिखरासीन थे।
मन से, वचन से, कर्म्म से वे प्रभु भजन में लीन थे,
विख्यात ब्रहमानंद-नंद के वे मनोहर मीन थे।

P.T.O.

Scanner by Droid-Veda

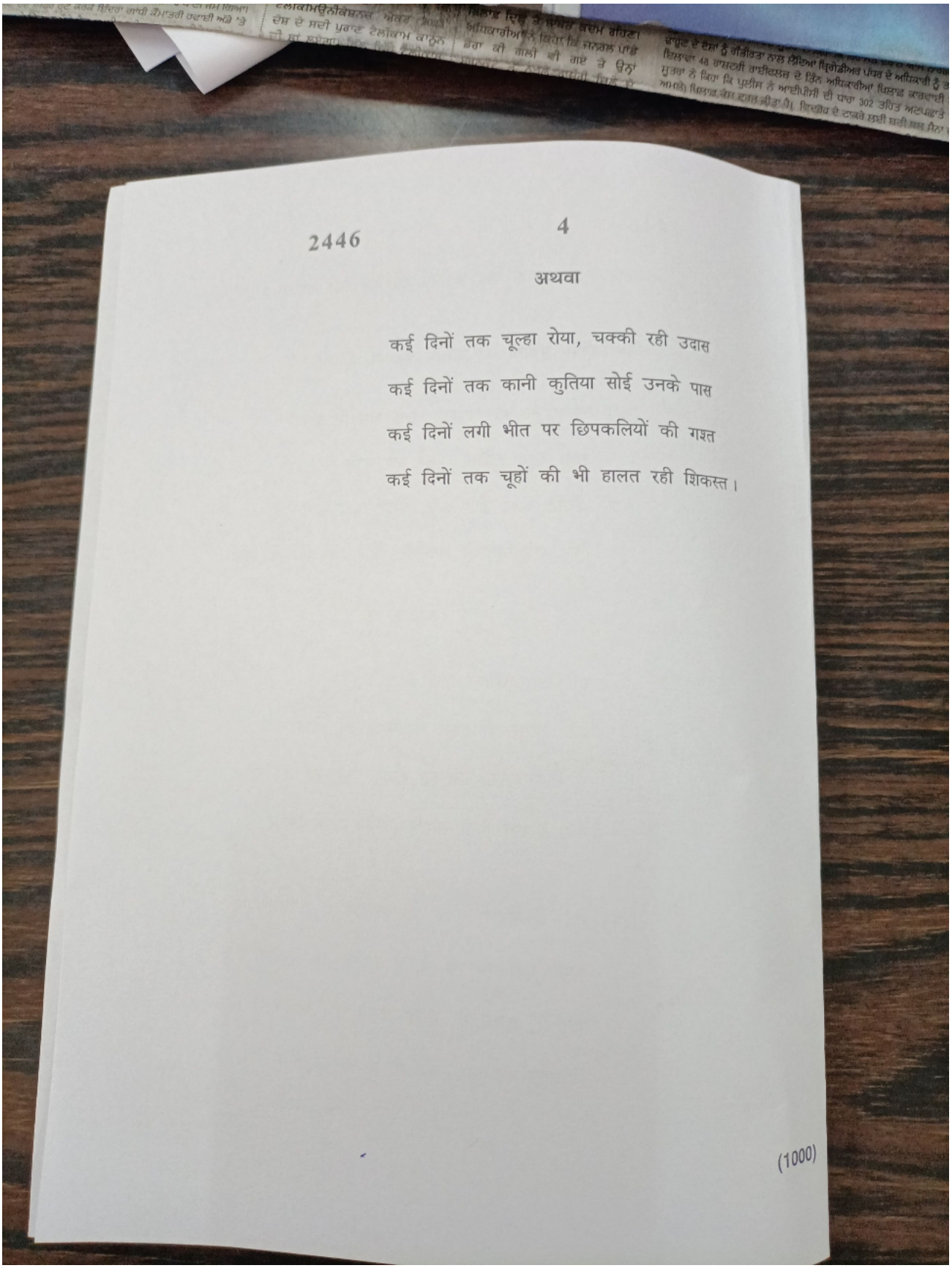

अथवा

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

Scanner by Droid-Veda